S.S. College, Jehanabad

B.A. Part - I Subject - Psychology (Subsidiary)

Teacher - A.K. Sinha Date: 08.09.2020

Topic - Perception (प्रत्यक्षीकरण) पृष्ठ-1

प्रत्यक्षीकरण एक संज्ञानात्मक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप ही किसी भी उत्तेजना का प्राणी तात्कालिक ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार वातावरण में उपस्थित उत्तेजना के तात्कालिक ज्ञान प्राप्त करने में अनेक मानसिक प्रक्रियाएं संलग्न होते हैं। सबसे पहले वातावरण में उपस्थित उत्तेजना को प्राणी अपने ग्राहकेन्द्रियों द्वारा ग्रहण करता है तत्पश्चात ज्ञानवाही स्नायु उस उत्तेजना से उत्पन्न स्नायु-प्रवाह को मस्तिष्क के अग्र भाग में स्थापित Cerebral cortex के संबंधित क्षेत्र में पहुँचाता है जहाँ पर उत्तेजना (Stimulus) का Perception यानि प्रत्यक्षीकरण प्राणी द्वारा किया जाता है। ज्ञात हो कि उद्दीपन का सबसे पहले, ग्राहकेन्द्रियों के अन्तिम भाग में ज्योंही स्नायु-प्रवाह उत्पन्न होता है, त्यों ही उसका संवेदना हो जाता है परन्तु उसका प्रत्यक्षीकरण मस्तिष्क में ही स्नायु-प्रवाह को जाने पर होता है। इसी लिए Wilhelm Wundt ने प्रत्यक्षीकरण को संवेदना तथा अर्थ के योग को प्रत्यक्षीकरण की संज्ञा दिया है :—

"Perception is the sum total of sensations and their meanings."

स्पष्ट है कि संवेदना और अर्थ के बिना प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है। अर्थ का तात्पर्य यह है कि किसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण करने में प्राणी सक्षम होता है जिसका अर्थ (Mental set) के रूप में मस्तिष्क में पहले से स्थापित है। अन्यथा उद्दीपन का पूर्ण तात्कालिक ज्ञान (Perception) संभव नहीं होता है। प्रत्यक्षीकरण के उपर्युक्त अर्थ, परिभाषाओं द्वारा और अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

प्रत्यक्षीकरण से संबंधित विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाएं निम्नांकित हैं:—

Chappman & e al के अनुसार :—

" Perception may be defined as the process by which sensory input (to the cortex) is interpreted."

जबकि Osgood द्वारा प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा इस प्रकार दी गई है:—

" Perception is the operation of a set of variables that intervene between sensory stimulation and awareness."

Kagan and Haveman के अनुसार :—

" Perception is the process through which we become aware of our environment by organising and interpreting the evidence of our senses."

Gibson ने प्रत्यक्षीकरण को परिभाषित करते हुए कहा कि :—

" Perception is extracting information from stimulation."

Colins & Drever के अनुसार :—

" Perception is the immediate apprehension of an object or situation affecting any or all of the sense organs by way of sensation."

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रत्यक्षीकरण में उद्दीपन की उपस्थिति से लेकर उसके तात्कालिक ज्ञान (awareness) तक व्यक्ति के अन्दर अनेक प्रकार की मानसिक प्रक्रियाएं होती हैं, जिसे Osgood ने a set of variables कहा है, तत्पश्चात उद्दीपकों का प्रत्यक्षीकरण सम्पन्न होता है।

शेष पृष्ठ-3 पर